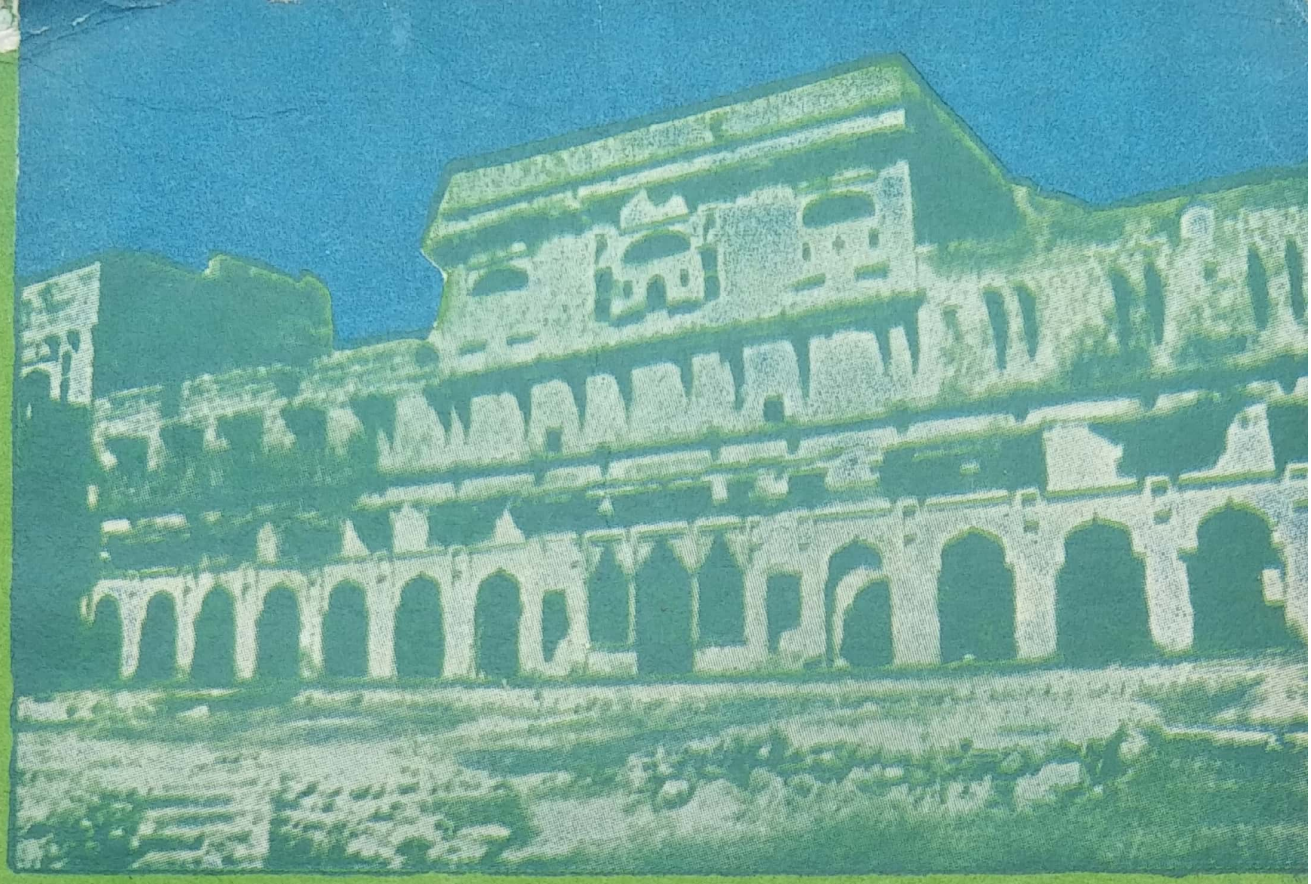

बुन्देलखण्ड का बृहद् इतिहास

[राजतंत्र से जनतंत्र]

डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी

Scanned with OKEN Scanner

बुन्देलखण्ड का बृहद् इतिहास

[राजतन्त्र से जनतन्त्र]

Govt. College, Sagar
LIBRARY
Acc. No. 4753

शासकीय महाविद्यालय
पुस्तकालय
सागर

लेखक

डॉ० काशी प्रसाद त्रिपाठी

एम. ए., एम. एड., पी-एच. डी.

प्रकाशक
पं० ललित नारायण त्रिपाठी
भारत भवन
पुरानी टेहरी, टीकमगढ़ (म० प्र०)

954.05543

प्रथम संस्करण ५००
१९९१

मूल्य १००)

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी-१०

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

अध्याय १—बुन्देलखण्ड का भौगोलिक परिचय १-५

अध्याय २—बुन्देलखण्ड के प्राचीन जातीय राज्य (१२५९ ई० तक) ६-३४

अध्याय ३—बुन्देलखण्ड के बुन्देला राज्य (१२५९-१९४८ ई०) ३६-१६९

(ओरछा, चन्देरी-वानपुर, दतिया, खनियाधाना, अठगढ़ी राज्य–चिरगाँव, धुरवई, विजना, तोड़ी, वंका-पहाड़ो, पन्ना, जैतपुर, अजयगढ़, चरखारी, विजावर, सरीला, जिगनी, लुगासी, जसौं, वीहट, गरौंली, शाहगढ़)

अध्याय ४—बुन्देलखण्ड के गैर बुन्देला स्थानीय राज्य १७०-२१२

(१७००-१९४८ ई० तक)

(समथर, छतरपुर, बेरी, आलीपुर, पाथरकछार-बरौधा, कदौरा-वावनी, नैगुवाँ रिबई, गौरिहार, चौबेराज्य-पालदेव, मकरी, पुरुवाँ, तरौन, भैंसोंडा, पहरा, भरतपुर-नयागाँव, कामता रजौला, खड्डी, विजयराघौगढ़)

अध्याय ५—बुन्देलखण्ड में गैर क्षेत्रीय मराठा राज्य २१३-२४२

(१७४२-१८५६ ई० तक)

(सागर, झाँसी, जालौन, कर्वी, कौंच, गुरसराय, बाँदा)

अध्याय ६—बुन्देलखण्ड के राज्यों के कम्पनी सरकार से सम्बन्ध २४३-२६५

(१८०२-४२ ई० तक)

अध्याय ७—बुन्देला विप्लव (१८४१-४३ ई०) २६७-२८२

(अ) सन्धियाँ, समझौते एवं इकरार

(ब) प्रशासनिक हस्तक्षेप

(स) सैनिक हस्तक्षेप

अध्याय ८—बुन्देलखण्ड के राज्यों के कम्पनी सरकार से सम्बन्ध २८३-२९०

(१८४३-५६ ई०)

(१) समझौते व इकरार

(२) प्रशासनिक हस्तक्षेप

(३) सैनिक हस्तक्षेप

(४) सहमिलन एवं सामाजिक सम्बन्ध

Scanned with OKEN Scanner

अध्याय ९—बुन्देलखण्ड की सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक दशा २९१-३२६

(अ) सामाजिक दशा—

जातियाँ एवं समाज, नारी स्थिति, धार्मिक दशा और रूढ़ियाँ, शिक्षा व्यवस्था, साहित्य एवं साहित्यकार।

(ब) आर्थिक दशा—

(१) कृषि की हीन दशा--भूमि की रचना, सिंचाई साधनों का अभाव, जंगली जानवरों द्वारा फसल नष्ट करना, दैवी प्रकोप, दोषपूर्ण व्यवस्था, दोषपूर्ण लगान, कृषि उत्पादित सामग्री सस्ती दर से विक्रीत होना।

(२) **उद्योग धन्धों की उपेक्षा**—उद्योग धन्धों में उदासीनता, खनिज सम्पदा का अविकसित रहना, यातायात साधनों का अभाव, हानिप्रद वस्तु विनिमय प्रणाली, शिक्षा और तकनीकी ज्ञान का अभाव।

(३) **अस्वस्थ्य सामाजिक परम्परायें**—वर्ण एवं वर्गवाद पर आधारित समाज, सामाजिक, धार्मिक रूढ़ियाँ।

(४) **राजनैतिक बीमारियाँ**—राजनैतिक विखण्डन, दोषपूर्ण व्यवस्था एवं विचौलिये सामन्त, मुद्रा-नाप तौल की विसंगतियाँ, डाकू-लुटेरों से प्रभावित राजनीति, राजनैतिक अस्थिरता में मराठों एवं अंग्रेजों का स्वार्थ संघर्ष।

(स) प्रशासनिक दशा—

स्थानीय राजाओं की प्रशासनिक एवं सैनिक दशा, मराठी ठिकानों की व्यवस्था एवं सेना, कम्पनी सरकार की प्रशासनिक एवं सैनिक व्यवस्था, बुन्देलखण्ड और राजनैतिक प्रतिनिधि,शिक्षा की प्राचीन पद्धति-चार पाटीं (परिशिष्ट शिक्षा पाटीं)

अध्याय १०—गैर क्षेत्रीय मराठी दासता का युगान्तकारी संघर्ष ३२८-३६९
(१८५७-५८ ई०)

कारण—राजनैतिक, धार्मिक, सैनिक विप्लव और

सत्तात्मक संघर्ष का प्रारम्भ, सैनिक विद्रोह और राजनैतिक स्वार्थ, मराठी सत्ता विरोधी ध्रुवीकरण।

(१) सागर क्षेत्र की घटनायें
(२) बाँदा क्षेत्र की घटनायें
(३) झाँसी क्षेत्र की घटनायें
परिणाम

अध्याय ११–राजतन्त्र से विमुक्ति और जनतन्त्र की स्थापना ३७१-४०६

(१८५९-१९५६ ई०)

१८५७ के विप्लव का शमन, विप्लव के पश्चात् की लूट और अराजकता, विक्टोरिया की घोषणा एवं आधीनस्थ संघ का निर्माण, सिंहासनरोहण व्यवस्था, अल्पावस्था में प्रशासनिक व्यवस्था, बुन्देलखण्ड इकाई का विखण्डन, अंग्रेजी सरकार और राजाओं के प्रति जन असंतोष, नरेन्द्रमण्डल, बुन्देलखंड के राज्यों में राष्ट्रीय चेतना और उत्तरदायी शासनी की माँग। सहमति पत्रक कॉवनैंट एवं संयुक्त राज्य विन्ध्यप्रदेश का गठन, मर्जर एग्रीमेंट, प्रिवीपर्स एवं राजाओं के विशेषाधिकार, जनतंत्रात्मक विन्ध्यप्रदेश राज्य की स्थापना, मध्यप्रदेश का निर्माण, राजाओं के विशेषाधिकारों और प्रिवीपर्स का अन्त।

परिशिष्ट—

(अ) १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के पत्र ४०६-४१७
(ब) सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ४१८
(स) शुद्धिपत्र ४२७-४२८

मानचित्र एवं चित्रावली—

१. बुन्देलखण्ड के राज्य ३५
२. महाराजा वीरसिंह देव द्वितीय ७२
३. बुन्देला विप्लव के क्षेत्र २६६
४. बुन्देलखण्ड के राज्यों के सिक्के ३१०
५. मराठी दासत्ता का युगान्ताकारी संघर्ष ३२७
६. आधीनस्थ संघ राज्यान्तर्गत बुन्देलखण्ड के राज्य ३७०

●

Scanned with OKEN Scanner

लेखक परिचय

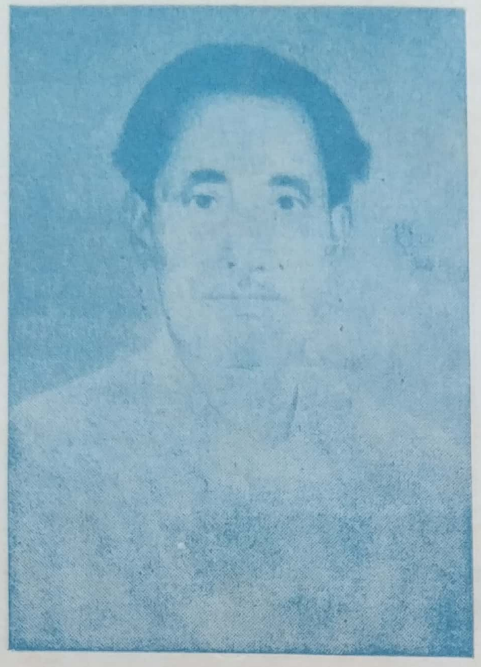

बुन्देलखंड क्षेत्र के ओरछा राज्य–वर्तमान जिला टीकमगढ़ म० प्र० के झिनगुवाँ ग्राम में अरजरिया आस्पदीय जुझौतिया द्विज कुल शिरोमणि पं० श्री ठाकुरदास तिवारी के घर ३ जुलाई १९३४ को उत्पन्न हुआ था।

पिता पं० ठाकुरदास जी तिवारी अपनी उदारता, स्पष्टभाषिता और जनसेवा एवं माता ललिता देवी कुल मर्यादा एवं सरलता के लिये क्षेत्र में ख्यात थीं। परिवार के आर्थिक दुरावस्था में ग्रसित होने पर ठाकुर पूरनसिंह खेरा एवं चौधरी हबीबुल्ला रज्जबअली खरगापुर के सद्भावपूर्ण आर्थिक सहयोग से मेरा अध्ययन इन्टर तक नियमित सम्भव हो सका था।

सन् १९५० में टीकमगढ़ पुरानी टेहरी के स्व० बल्देव प्रसाद तिवारी की इकलौती पौत्री रामलली देवी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पत्नी की सादगी, धार्मिक प्रवृत्ति तथा सहिष्णुता के सहयोग से मेरा स्वाध्याय गतिमान रहा। इन्टर परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् १९५५ में ३० रुपया मासिक वेतन पर शिक्षक बना। समय का पालन और उसका सदुपयोग करते हुये निष्ठा एवं निस्वार्थ भाव से शिक्षण सेवा में लगा रहा। सन् १९६० में स्वाध्यायी रूप से स्नातक परीक्षा एवं १९६३ में स्नातकोत्तर परीक्षा इतिहास विषय में उत्तीर्ण कर १९६४ में बी० एड० एवं १९६६ ई० में एम० एड० परीक्षा सागर विश्वविद्यालय से ही उत्तीर्ण की थी।

गुरुजनों, विद्वज्जनों के आशीष एवं मित्रों की प्रेरणा से सन् १९८२ में "बुन्देलखण्ड का इतिहास १८०२–५८ ई०" विषय पर अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा से पी-एच-डी० की। तदनन्तर डॉक्टर बैजनाथ शर्मा इतिहास विभागाध्यक्ष सागर विश्वविद्यालय के प्रोत्साहन पर मैंने "बुन्देलखण्ड का बृहद् इतिहास–राजतंत्र से जनतंत्र" की रचना की।

परमात्मा ने मुझे एक पुत्री पुष्पा एवं दो पुत्र भारतभूषण, रमेश कुमार दिए, जिनके पालन-पोषण के साथ-साथ मुझे पढ़ने-लिखने एवं शिक्षण कार्य में बहुत मजा और आत्म संतोष जैसा परम सुख प्राप्त होता रहा। पद, पैसा एवं प्रतिष्ठा की ओर मैंने न कभी सोचा, न देखा ही। शिक्षण व्यवसाय मेरे लिये स्वयं में एक बादशाहत रही। ज्ञानदान से बढ़ कर कोई व्यवसाय मुझे उत्तम नहीं लगा। इस कार्य में मैं ऐसा खोया रहा कि पता ही नहीं चला कि जीवन के सत्य की संध्या कब और कैसे आ गई।

●

Scanned with OKEN Scanner